IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

हिंदी साहित्य और स्त्री विमर्श

यल्लापा परशराम पाटील
पीएच. डी. शोधार्थी
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर.
iRrk& ;Yykik ij"kjke ikVhy
HkkbZ rqdkjke dksysdj egkfo|ky;]usljh
Rkk-xMfgXyt ft-dksYgkiwj
fiu dksM 416504
yallapa263@gmail.com

सारांश : *स्त्री - विमर्श हजारों वर्षों में चले आ रहे रुढ़ि परंपरा, धार्मिक वर्जनाओं, जो स्त्री विरोधी स्त्री का दलन करनेवाले स्त्री को गुलाम बनाकर चार दीवारों में कैद करके रखनेवाली परंपरा का विरोध करनेवाली विचारधारा है। हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श की शुरुवात छायावाद काल से मानी जाती है। जिसमें महादेवी वर्मा की श्रृंखला की कड़ियां नारी सशक्तिकरण का सुन्दर उदहारण है जिसमें नारी जागरण एवं मुक्ति के सवाल को उठाया गया है। ऐसा साहित्य जिसमें स्त्री समस्याओं का चित्रण हो 'स्त्री विमर्श' कहलाता है।" वैसे तो छायावाद से पहले भी स्त्री की समस्याओं को लिखने का प्रयास लिखने के साथ अन्य लेखकों ने भी किया था किन्तु उन्हें इतनी सफलता नहीं मिली जितनी स्त्री लेखिकाओं से मिली। नारी सशक्तिकरण १९६० से अधिक मुखरित हुआ। उषा प्रियंवदा, कृष्ण सोबती, मधू भंडारी एवं शिवानी इन लेखिकाओं ने स्त्री के मन की अन्तर्दशा, अन्तर्द्वन्द्व को जाना पहचाना और लिखना आरम्भ किया। जो लोगों के दिलों तक पहुँच गया।*

कुंजी शब्द: हिंदी साहित्य और स्त्री विमर्श

I. प्रस्तावना:

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्रा क्रियाः ।

अर्थात, जहाँ नारी की पूजा होती है वहां साक्षात् परमात्मा का निवास होता है किन्तु जहाँ नारी की पूजा नहीं होती वहां के सारे कर्म अस्तमात होते है।

स्त्री - विमर्श हजारों वर्षों में चले आ रहे रुढ़ि परंपरा, धार्मिक वर्जनाओं, जो स्त्री विरोधी स्त्री का दलन करनेवाले स्त्री को गुलाम बनाकर चार दीवारों में कैद करके रखनेवाली परंपरा का विरोध करनेवाली विचारधारा है। हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श की शुरुवात छायावाद काल से मानी जाती है। जिसमें महादेवी वर्मा की श्रृंखला की कड़ियां नारी सशक्तिकरण का सुन्दर उदहारण है जिसमें नारी जागरण एवं मुक्ति के सवाल को उठाया गया है। ऐसा साहित्य जिसमें स्त्री समस्याओं का चित्रण हो 'स्त्री विमर्श' कहलाता है।" वैसे तो छायावाद से पहले भी स्त्री की समस्याओं को लिखने का प्रयास लिखने के साथ अन्य लेखकों ने भी किया था किन्तु उन्हें इतनी सफलता नहीं मिली जितनी स्त्री लेखिकाओं से मिली। नारी सशक्तिकरण १९६० से अधिक मुखरित हुआ। उषा प्रियंवदा, कृष्ण सोबती, मधू भंडारी एवं शिवानी इन लेखिकाओं ने स्त्री के मन की अन्तर्दशा, अन्तर्द्वन्द्व को जाना पहचाना और लिखना आरम्भ किया। जो लोगों के दिलों तक पहुँच गया।

जिस प्रकार एक सिक्के के दो पहलू होते है उसी प्रकार समाज के भी दो पहलू होते है, - स्त्री और पुरुष - जो एक-दूसरे के पूरक होते है। मानो उन दोनों का एक दूसरे के बिना कोई अस्तित्व ही नहीं है। शुरू में स्त्री - पुरुषों की समानता का आंदोलन रहा जिसे 'नारीवाद' कहा जाता है। जिसे अंग्रेजी में 'फेमिनिज्म' शब्द प्रचलित है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

सृष्टि के आरंभ से ही सृष्टि के निर्माण और संचालन में नारी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मानव जाति की सभ्यता एवं संस्कृति के विकास का मूल आधार नारी को ही माना जाता है। नर और नारी सृष्टि के दो मूलभूत तत्व है। दोनों के सहयोग और समन्वय से ही सृष्टि की रचना होती है। नारी की सृजनात्मक शक्ती के कारण ही गृह संस्था का जन्म हुआ तथा परिवार और समाज का विकास हुआ। सृष्टि रचना में पुरुष की तुलना में नारी का योगदान अधिक है। नारी सृष्टि का आधार है। नारी पुरुष की प्रेरणा है और पुरुष संघर्ष का प्रतीक है। मानवीय गुणों की दृष्टि से विचार किया जाए, तो पुरुष की तुलना में नारी अधिक मानवीय है। नर-नारी की पूरकता और नारी की श्रेष्ठता को प्रतिपादित करते हुए महादेवी वर्मा कहती है, "पुरुष समाज का न्याय है, स्त्री दया, पुरुष प्रतिशोधमय क्रोध है, स्त्री क्षमा, पुरुष शुल्क कर्तव्य है, स्त्री सरस सहानुभूति और पुरुष यत्न है स्त्री हृदय की प्रेरणा। ऐसा एक भी सामाजिक प्राणी नहीं मिलेगा। जिसका जीवन, माता, पत्नी, भगिनी, पुत्री आदि स्त्री के किसी न किसी रूप से प्रभावित न हुआ हो।" इस प्रकार कहा जा सकता है कि सृष्टि के आदिकाल से ही नारी का गौरवमय स्थान रहा है और वह पुरुष की पूरक तथा समकक्ष सहयोगी ही रही है।

इतनी सारी महानताओं के बाद भी नारी का समाज में वह स्थान नहीं मिला जिसकी वह अधिकारी है। संपूर्ण समाज व्यवस्था का निर्माण पुरुषों द्वारा होने के कारण नारी की भूमिका दूसरे दर्जे की ही रही है। ऐसी प्रताडित नारी की व्यथा को अपने साहित्य द्वारा समाज के सम्मुख लाने को प्रयास हिंदी साहित्यकार सदियों से करते आ रहे है। स्त्री की स्थिती सुधारने उसे विविध समस्याओं तथा सामाजिक अन्याय से मुक्त करने के लिए समाज सुधारकों ने व्यापक प्रयास किए उनका प्रभाव साहित्य पर भी दिखाई देता है। मौजूदा साहित्य में स्त्री विमर्श केंद्रीय स्थान प्राप्त कर चुका है। पिछले कुछ दशकों में हिंदी साहित्य में स्त्रीवादी साहित्य ने अपना एक अलग स्थान बना लिया है।

समाज के दो पहुल स्त्री पुरुष एक दूसरे के पूरक है। किसी एक के अभाव में दूसरे का अस्तित्व नहीं है। उसके बाद भी पुरुष समाज ने महिला समाज को अपने बराबर के समानता से वंचित रखा। यहीं पक्षपात दृष्टि ने शिक्षित नारियों को आंदोलन करने को मजबूर किया जो आज ज्वलंत मुद्दा नारी विमर्श के रूप में दृष्टिगोचर है। आदिकाल से ही नारी की दशा दयनीय एवं सोचनीय थी स्त्रियों की दशा को देखकर विवेकानंद कहते हैं "स्त्रियों की अवस्था सुधारे बिना जगत के कल्याण की कोई संभावना नहीं है। पक्षी के लिए एक पंख से उड़ना सम्भव नहीं है।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी गद्यकार एवं कवि रघुवीर सहाय जी नारी जीवन की वास्तविक चित्र दिखाया है, उन्होंने अपने काव्य में स्वतंत्रता के बाद स्त्री जीवन की अनेक समस्याओं को विषय बनाया है। जिस भारत में स्त्री को वैदिक काल में 'देवता' कहा जाता था आज यही अनेक शोषण का शिकार हो रही है। वे कहते है

'नारी बेचारी है
पुरुषकी मारी है
तन से क्षुदित है
लपक कर झपक कर
अंत में चित है

स्त्री विमर्श वस्तुतः स्वाधीनता के बाद की संकल्पना है। पितृसत्ताक व्यवस्था ने स्त्री समाज को हमेशा अंधकारमय जीवन जीने को मजबूर किया है। लेकिन आज की नारी चेतनशील है जिसे अच्छे - बुरे का ज्ञान है। इसीलिए आज इस व्यवस्था का बहिष्कार कर स्वेच्छात्मक जीवन जीने को आतुर दिखाई पड़ती है।

प्रेमचंद से लेकर आज तक अनेक लेखकों ने स्त्री समस्या को अपना विषय बनाया लेकिन वे उस रूप में नहीं लिख सके जिस रूप में महिला लेखिकाओं ने लिखा है। हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श की शुरुआत छायावाद काल से मानी जाती है। महादेवी वर्मा की कविताओं में वेदना के विभिन्न रूप दिखाई देते हैं। उनकी 'शृंखला की कड़ियाँ' स्त्री सशक्तीकरण का सुंदर उदाहरण है, जिसमें नारी-जागरण एवं मुक्ति के सवाल को उठाया गया है। प्रेमचंद से लेकर राजेंद्र यादव तक अनेक पुरुष लेखकों ने नारी समस्या को

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

उकेरा है। हिंदी कथा साहित्य में नारी-मुक्ति को लेकर स्त्री-विमर्श की गूंज १९६० ई. में पश्चिम से हुआ था, जिसमें चार नाम चर्चित हैं। उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी एवं शिवानी। हिंदी कथा साहित्य में नारी विमर्श के धीरे-धीरे आठवें दशक तक आते-आते एक आंदोलन का रूप ले लिया। आठवें दशक की महिला लेखिकाओं में उल्लेखनीय हैं- ममता कालिया, अग्निहोत्री, चित्रा मुदगल, मणिक मोहनी, मृदुला गर्ग, मृदुला सिन्हा, मंजुला भगत, मैत्रेयी पुष्पा, मृणाल पाण्डेय, नासिरा शर्मा, शिरीष बडारवाल, कुसुम अंसल, इंदु जैन, सुनीता जैन, प्रभा खेतान, सुधा अरोड़ा, क्षमा शर्मा, अर्चना वर्मा, नमिता सिंह, अलका सरावगी जया जादवानी, मुक्ता रमणिक गुप्ता आदि थे। सभी संचिकाओं ने नारी मन की गहराइयों अंतर्द्वंद्व तथा अनेक समस्याओं का अंकन संजीदगी से किया है।

बीसवीं शताब्दी के लिखित साहित्य का स्मरण करें तो हम स्वयं विस्मय में पड़ जायेंगे की इस एक अकेली सदी में सर्वाधिक महिला रचनाकार गर्व से उन्नत भाल लिए इतिहास पथ पर खड़ी हुई हैं। बीसवीं पर लगातार विचार हुआ। इसकी पहल उन्नीसवीं शताब्दी के समाज सुधारकों ने कर दी थी। राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद विद्यासागर, महादेव गोविंद रानडे, महर्षि कर्वे, ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले, गोखले आदि ने महिला शिक्षा का स्पष्ट समर्थन किया और महिला पक्षधरता के लिए सकारात्मक धरातल तैयार किया। भारत के नवजागरण काल में स्त्रियों के अस्तित्व और व्यक्तित्व की रक्षा और विकास के व्यापक अभियान छेड़े गए। यदि उन वर्षों में बाल-विवाह, सतीप्रथा, विधवा प्रताड़ना और अशिक्षा दूर करने के प्रयत्न न किए गए होते तो बीसवीं शताब्दी का अधिकांश साहित्य दूसरी तरह से लिखा गया होता। उन्नीसवीं सदी के सुधारवादी आंदोलनों में स्त्री के अंदर अस्तित्व की चेतना जगाई। इसके बावजूद स्त्रियों का कोई स्वतंत्र आंदोलन उन्नीसवीं सदी में उभरकर नहीं आया। बीसवीं सदी के प्रथम दशक को ही इसका श्रेय जाता है कि स्त्री-जागृति की चेतना व्यापक रूप से उभरी।

बीसवी शताब्दी के मध्य तक लिखित साहित्य में ऐसे अविस्मरणीय और अयद्याभी पारी का एक अलबम तैयार हो गया जिसमें प्रेमचंद की धनिया, निर्मला, जैनंद की मृणाल और सुनिता, यषपाल की तारा और कनक, अज्ञेय की शशि और रेखा, भगवतीचरण वर्मा की चित्रलेखा और रेखा जैसे कई क्लासिक नाम जुड़ गये। इनकी स्त्री विषयक वैचारिक्सा में तीखे लेवर और विसंगती-चेतना की धार मिली। लेकिन स्त्री का माध्यम पात्र और विषयवस्तु बने रहने से चैन नहीं था। शिक्षा के साथ उसकी चेतना का विकास हुआ। अपने अस्तित्व अस्मिता और अवस्थिति पर उसे स्वयं विचार करना प्रासंगिक लगा। ऐसी स्थिति में पूर्व से उस पर लिखे गये पर अगर उसे संदेह और असंतोष रहा, तो उसके लिए कलम उठाना जरूरी हो गया। जब स्त्री को लगा कि उसका अस्तित्व, स्थान, अधिकार और आजादी संकट में है, उसे अपने विचारों को अभिव्यक्ति देनी पड़ी।

हमने अंग्रेजों से आजादी १९४७ में हासिल कर ली, लेकिन उन्हीं हथियारों से हम अपनी आजादी अभी तक हासिल नहीं कर पाई। स्त्री लेखन स्त्री के लिए मुक्ति के प्रयासों का द्वार है, अनुभूति और अभिव्यक्ति का द्वारा। दूसरे शब्दों में स्त्री लेखन के साथ ही स्त्री-विमर्श का समय भी आरंभ होता है। पुरुषों द्वारा लिखी अपनी कथा और गाथा स्त्री को अधूरा इतिहास लगती है। इसीलिए कभी मीरा के रूप में, कभी अज्ञात महिला के रूप में वह अपनी असमान स्थिति पर विचार करती है। और पुरुषयाची समय में अपना सतत सत्याग्रह दर्ज करती है। सदियों की शातिर-तैयारी से पुरुष-समाज ने असमानता का ऐसी आचार-संहिता गठी हैं कि स्त्री को कभी शास्त्र से, कभी धर्म से कभी इतिहास से कभी अख्यान से जताया गया है कि पुण्य की अधिकारी वहीं स्त्रीया रही है कि जी नेपथ्य में रहीं, अजाकारिणी बनी और जिन्होंने पुरुष की इच्छानुसार जीवन जियो। बीसवी सदी में स्त्रियों की जो टूकडी समान स्थान, अवसर और अधिकार की दौड में हिस्सा लेने आई, उनके हिस्से हिंसा पड़ी। महिला लेखन ने जब इन सब जटिलताओं को पकड़ने का प्रयास किया है। असंतोष और अस्वीकार के प्रारंभिक तीखेपन के तहज नकारात्मक लेखन करत-करते आज महिला लेखन वैचारिक वयस्कता और सकारात्मक, सम्यक वृत्तांत तक का सफर तय कर चुका है।

बीसवी सदी के प्रारंभिक कालखंड की अन्य उल्लेखनीय लेखिकाएँ थी, जानकी देवी, ठकुरानी शिवमोहिनी, गौरादेवी, सुशीला देवी और धनवती देवी। यह राजनितिक उथल-पुथल और जन-जागरण का भी समय था। अतः दनके बाद की महिला कहानीकारों ने हमे इन्ही से प्रेरित राष्ट्रीय चेतना के दर्शन हुए। वनलता देवी, सरस्वती देवी, हेमंतकुमारी और प्रियंवदा देवी ने अपनी कहानियों में राजनीतिक सरोकारों का परिचय दिया। समाज में फैली कुरीतियों, तथा बाल-विवाह, परदा-प्रथा अशिक्षा को विषय वस्तू बनाकर

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

मुन्नी देवी भार्गव, शिवरानी देवी, चंद्र प्रभादेवी मेहरोत्र, विमला देवी चैधरानी आदि ने कहानियाँ लिखी। इन रचनाकारों ने अपने तरीके से यथार्थपरक, समाजोन्मुखी लेखन की नीवं रखी।